SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

हिन्दी की शैली साहित्यकारों के दृष्टि में

सुशांत चक्रवर्ती, (Ph. D.), हिंदी विभाग,
विवेकानंद महाविद्यालय, रायपुर, छत्तीगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author
सुशांत चक्रवर्ती, (Ph. D.), हिंदी विभाग,
विवेकानंद महाविद्यालय, रायपुर, छत्तीगढ़, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

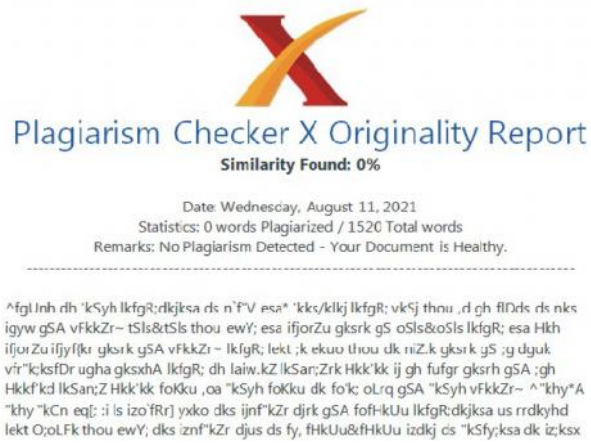

Received on : 10/08/2021
Revised on : -----
Accepted on : 17/08/2021
Plagiarism : 00% on 11/08/2021

Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 0%

Date: Wednesday, August 11, 2021
Statistics: 0 words Plagiarized / 1520 Total words
Remarks: No Plagiarism Detected - Your Document is Healthy.

शोध सार

साहित्य और जीवन एक ही सिक्के के दो पहलू है अर्थात् जैसे–जैसे जीवन मूल्य में परिवर्तन होता है वैसे–वैसे साहित्य में भी परिवर्तन परिलक्षित होता है अर्थात् साहित्य समाज या मानव जीवन का दर्पण होता है यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी। साहित्य की संपूर्ण सौंदर्यता भाषा पर ही निहित होती है। यही भाषिक सौंदर्य भाषा विज्ञान एवं शैली विज्ञान का विषय वस्तु है। शैली अर्थात् 'शील'। शील शब्द मुख्य रूप से प्रवृत्ति, लगाव को परदर्शित करता है। विभिन्न साहित्यकारों ने तात्कालिक समाज व्यवस्थ जीवन मूल्य को प्रदर्शित करने के लिए भिन्न–भिन्न प्रकार के शैलियों का प्रयोग किया है। उनके द्वारा प्रयुक्त शैली रचना में विचारों और उनकी अभिव्यक्ति को सूचित करती है। शैली विज्ञान साहित्य की भाषा के आधार पर की गई सौंदर्य मूलक व्याख्या है। प्रस्तुत शोध पत्र में विभिन्न साहित्यकारों की दृष्टि से शैली के विभिन्न प्रारूपों को प्रस्तुत किया गया है।

मुख्य शब्द

शैली, साहित्य, साहित्य शास्त्र, भाषा शिल्प, भाषा विज्ञान.

शैली शब्द की व्युत्पत्ति हिंदी भाषा के 'शील' शब्द से हुई है। शील शब्द मुख्य रूप से स्वभाव, प्रवृत्ति, लागव आदि को परिलक्षित करता है। ये सभी विभिन्न विशेषताओं के द्योतक है, जैसे स्वभाव विशेष प्रकृति का सूचक है, लक्षण स्वरूप की विशेषता का, झुकाव रूचि, रूचि की विशेषता का और आदत कर्म की विशेषता का।

'पाणिनी के 'धातुपाठ' में शील दो धातुएं है एक तो श्वादि गण में आती है, जिसका अर्थ 'एकाग्र' होना (समाधि) है, दुसरी चुरादि गण में आती है, जिसका अर्थ 'अभ्यास होना' (उपधारण अभ्यास) है। शील शब्द में 'अप' लगाने से शैली शब्द बनता है'।[1]

भारतीय साहित्य शास्त्र में प्रवृत्ति, वृत्ति, रीति, संघटना, मार्ग आदि अवधारणाएँ शैली के अत्यंत सन्निकट मानी गई है। प्रवृत्ति शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम भरत ने अपने नाट्य शास्त्र में किया। भरत के अनुसार विभिन्न प्रकार के देशों के वेशभूषा, भाषा, आचार, विचार के ज्ञान को प्रदान करने वाली गुणों को प्रवृत्ति कहा है। इसके पश्चात् राजशेखर ने वेश–विन्यास क्रम को प्रवृथ्तत कहा है।[2]

इन मान्यताओं के अनुसार प्रवृत्ति का विशेष संबंध देशकाल से होता है जबकि शैली को वैयक्तिक प्रकृति का माना जा सकता है। इसी प्राकर भरत ने वृत्ति को अभिनयात्मक पद्यनि माना जबकि साहित्य शास्त्रीय शैली भाषा पद्धतियों से संबंधित हे। शैली में मुख्यतः दो तत्व–वस्तुगत एवं वैयक्तिक समाहित होता है।

डॉ. नगेन्द्र के अनुसारः साहित्य के भावागत स्वरूप् को विश्लेषित करके, शब्द तथा अर्थ की गुणमूलक शक्तियां का विवेचन कर साहित्य की समीक्षा करने की एक सम्यक विधि प्रस्तुत की जिसका बहुलांश आज के शैली विज्ञान का भी विवेच्य है।[3]

शैली मनुष्य की पहचान कही गई है। वह अपने भावों अथवा विचार को दूसरों तक सम्प्रेषित करने के लिए भाषा में अनेक प्रयोग करता है। शैली शब्द व्यापक है और इसे परिभाषित कर पाना कठिन है फिर भी अनेक विद्वानों ने अपने–अपने ढंग से इसे परिभाषित करने का प्रयत्न किया है। जैसेः

1. शैली मूलतः एक वैयक्तिक गुण है।[4]
2. किसी लेखक की शैली उसके मस्तिष्क की सच्ची प्रतिलिपि है।[5]
3. शैली लेखक का मानस–चित्र है।[6]
4. शैली लेखक के व्यक्तित्व का घनिष्ठ एवं अविमान्य तत्व है।[7]
5. शैली अनुभूति के वैयक्तिक रूप की निर्बाध अभिव्यक्ति है।[8]
6. शैली इस प्रकार की व्यंजनात्मक युक्तियाँ है, जिनसे भाषा की शक्ति का संवर्धन होता है।[9]
7. शैली वह साधन है जिसके द्वारा मनुष्य दूसरों से सम्पर्क स्थापित करता है।[10]
8. शैली विज्ञान एवं संगठित भाषा की उन विशेषताओं का अध्ययन करता है, जो प्रभावकारिता की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।[11]
9. शैली विचारों की पोशा है।[12]
10. शैली कथ्य और कथन के लिए प्रयुक्त भाषा के अतिरिक्त कोई ऐसा तत्व है, जिसका प्रयोग कथ्य को प्रभावी ढंग से श्रोता अथवा पाठक तक पहुँचाने के लिए किया जाता है।[13]
11. शैली भाषा के सामान्य मानक पथ से विचलन है।[14]

इसमें से कुछ परिभाषाएँ यह स्पष्ट करती है कि रचना में रचनाकार का व्यक्तित्व व्याप्त रहता है। कुछ साहित्यकारों के अनुसार शैली रचना में विद्यमान वह क्षमता है, जो सहृदय को अभिभूत कर देती है। अन्य विद्वानों के अनुसार रचना में विचारों और उनकी अभिव्यक्ति के संबंध को सूचित करती है।

वस्तुतः शैली परिभाषाकारों की भाषा एवं साहित्य के सम्बन्ध में अपनाई गई धाराणाओं से ही जुड़ी हुई है। जिन भाषाविदों ने साहित्य में एक विशिष्ट भाषा के प्रयोग को स्वीकारा है, वे शैली में भाषा के वैशिष्ट्य पर ही केन्द्रित है।

साहित्य और जीवन एक दूसरे के पूरक है। जैसे–जैसे जीवन के मूल्य बदलते हैं, साहित्य में भी परिवर्तन लक्षित होता है। पर यह अवश्य है कि साहित्य का संपूर्ण सौदर्य भाषा पर ही आधारित होता है। यही भाषिक सौंदर्य भाषा विज्ञान एवं शैली विज्ञान के अध्ययन का विषय है। भाषा के सौंदर्य के बिना न साहित्य की नियति है और न भाषा के सौन्दर्य विश्लेषण के बिना साहित्यशास्त्र की।

हिन्दी साहित्यशास्त्र ने भाषा के वर्ण, पद, प्रत्यय, वाक्य, प्रकरण और प्रबन्ध सभी स्तरों पर अलंकार, गुण,

वक्रोक्ति, ध्वनि, औचित्य आदि की चर्चा करके तथा साहित्यिक कृति को एक सन्निष्ठ व्यक्तित्व प्रदान करके एक अत्यन्त समृद्ध शैली विज्ञान को प्रस्तुत किया है। शैली विज्ञान साहित्य की, भाषा के आधार पर की गई सौंदर्य मूलक व्याख्या है। शैली विज्ञान, इस व्याख्या का आधार 'भाषा' इसलिए मानता है कि वह साहित्य को 'शाब्दिक कला मानता है।'[15]

वस्तुतः आधारभूत भारतीय शैली विज्ञान साहित्य को भाषा स्वीकार करता है और भाषा को समग्र परिवेशों, सन्दर्भो के साथ तथा भाषा के विभिन्न कार्यो और भूमिकाओं का विशलेषण करके साहित्य का विवेचन करता है। पहले भारतीय एवं पाश्चात्य साहित्यशास्त्र में शैली को वैयक्तिक विशेषताओं का प्रतीक माना जाता था, किन्तु अब शैली को रचना की भाषा से सम्बद्ध करके देखने की प्रवृत्ति का विकास हुआ है और यह माना जाने लगा है कि सामान्य भाषा में शैली ही काव्यत्व की सृष्टि करती है। रचना एक ओर रचनाकार की कारयित्री प्रतिभा का प्रतिफलन होती है तो दूसरी ओर सहृदय की भावयित्री प्रतिभा का योग। इसके अतिरिक्त वह रचित होने के बाद अपने भाषायी कलेवर को लिए हुए रचनाकार से स्वतन्त्र हो जाती है।

भारतीय साहित्यशास्त्र ने रचना को कवि की कारयित्री प्रतिभा एवं 'कवि स्वभाव' आदि अवधारणाओं से जोड़कर शैली के अध्ययन के लिए रचनाकार केन्द्रित दृष्टिकोण को ही स्वीकार किया है और प्रतिभा की प्रकृति तथा कवि–स्वभाव के आधार पर मार्ग–विभाजन, शैली विभाजन ही है, प्रस्तुत किया है।

भाषा एक सामाजिक उत्पाद है और शैली भाषा उत्पाद। अतः भाषा और शैली में स्रोत–स्रोतस्विनी संबंध है, किन्तु एक 'प्राणमय अनबन' के साथ। शैली भाषा है, पर साथ ही भाषा के प्रति विद्रोह भी। शैली भाषा से निःसृत होती है इसीलिए तो भाषा की सीमाएँ उसकी विवशताएँ शैली को भी सीमित और विवश करती है, किन्तु शैली भाषा की समस्त सामर्थ्य से असंतुष्ट रहकर उसका अतिक्रमण भी करती है और भाषा को अभिव्यक्ति की नयी से नयी शक्ति का दान देती है। भाषा के स्वरूप् का वैज्ञानिक और उसका नियमन करने के लिए व्याकरण तैयार होते है, इसी तरह शैली का विश्लेषण करने के लिए उसके नियमन की दिशाओं का संकेत देने के लिए शैली विज्ञान निर्मित होता है।[16]

निष्कर्ष

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि शैली एक रचनाकार द्वारा निर्मित भाषा–शिल्प है, इसलिए वह रचनाकार, भाषा और शिल्प से जुड़ी रहती है। वह इन सबसे घनिष्ठ रूप में जुड़ी हुई रहकर भी इन सबसे स्वतंत्र है। उसमें रचनाकार की प्रतिभा की नवीनता गत्यात्मकता और वैयक्तिकता है, भाषा की सार्वजनीनता है, शिल्प की सुष्ठु योजना है, और विषय या संदेश की संवहनता है।[17]

शैली भाषा में ही रमती है, अतः भाषा वैज्ञानिक विवेचन की अपेक्षा रखती है। शैली भाषा में निहित सौंदर्यधर्मी शक्तियों का सामंजस्य है, इसलिए उसके अध्ययन के लिए भाषा का सौन्दर्यशास्त्रीय विश्लेषण आवश्यक होता है। इस प्रकार शैली विज्ञान भाषा का सौन्दर्यशास्त्रीय भाषा विज्ञान है।

शैली विज्ञान साहित्य की शुद्ध साहित्य की दृष्टि से, कृति की दृष्टि से उसकी आंतरिकता की से व्याख्या का विज्ञान है। वह कृति के रूप और अर्थ के संबंधों की व्याख्या, उसके सौंदर्य की वस्तुनिष्ठा व्याख्या का विज्ञान है। साथ ही वह साहित्य की अभिव्यक्ति के विश्लेषण का तो विज्ञान है ही, वह अभिव्यक्ति के भी विश्लेषण का विज्ञान है।[18]

संदर्भ सूची

1. प्रकाश, राघव, (1983) *''शैली विज्ञान और पाश्चात्य एवं भारतीय साहित्य शास्त्र'',* राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर।
2. राजशेखर, शर्मा, केदारनाथ (हिन्दी अनु.) *''काव्य मीमंसा'',* बिहार राष्ट्रभाषा परिषद पटवा 1954 तृतीय अध

याय पृष्ठ 18।

3. प्रकाश, राघव, *''शैली विज्ञान और पाश्चात्य एवं भारतीय साहित्यशास्त्र'',* राजस्थान, हिन्दी ग्रंथ अकादमी जयपुर पृष्ठ संख्या 22।
4. प्रसाद, रामचंद्र, (1973) *'शैली''*, बिहार हिंदरी ग्रंथ अकादमी, पटना, पृष्ठ 9।
5. तिवारी, भोलानाथ, (1977) *'शैली विज्ञान''*, शब्दाकर, दिल्ली, पृष्ठ 17।
6. ब्रिटेनिका एनसायक्लोपीडिया
7. द न्यू डिस्कवरी ऑफ थॉट
8. मूरी, जे.एम., (1921) *'द प्राब्लम ऑफ स्माइल''*, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, लंदन, पृष्ठ 17।
9. नगेन्द्र, (1976) *'शैली विज्ञान''*, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली, पृष्ठ 11.
10. लुकास, एफ.एल., (1955) *''स्माइल''*, कैसल एंड कंपनी लिमिटेड, लंदन, पृष्ठ 49।
11. वॉक, टी.सी, (सं) (1960) *''स्माइल इन लैंगवेज''*, एम.आई.टी. प्रेस कैम्ब्रिज पृष्ठ 14।
12. ऐटरोच, एन., *''टू द स्टडी ऑफ स्माइल''*, जे रचेन्सर, पृष्ठ 12।
13. सीवॉक, टी. (सं) (1960) *''स्माइल इन लैंगवेज''*, एम.आई.टी. प्रेस कैम्ब्रिज, पृष्ठ 293।
14. तिवारी, भोलानाथ, *''व्यवहारिक शैली विज्ञान''*, शब्दाकार प्रकाशक, तुर्कमान गेट दिल्ली पृष्ठ 10।
15. प्रकाश, राघव, (1983) *''शैली विज्ञान और पाश्चात्य एवं भारतीय साहित्य शास्त्र''*, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, पृष्ठ 166।
16. प्रकाश, राघव, (1983) *''शैली विज्ञान और पाश्चात्य एवं भारतीय साहित्य शास्त्र''*, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, पृष्ठ 64।

****